P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-8* November- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वर्तमान परिपेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया में दुश्चिंता एवं समायोजन एक आवश्यक घटक

रतन लाल सुथार
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग
संकाय कला, शिक्षा एवं
सामाजिक विज्ञान
जयनारायण व्यास वि.वि.,
जोधपुर

सुनिता मीणा
शोध छात्रा,
शिक्षा विभाग
संकाय कला, शिक्षा एवं
सामाजिक विज्ञान
जयनारायण व्यास वि.वि.,
जोधपुर

सारांश

देश की शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य के बारे में एक कवि ने अपनी चार पंक्तियों में वर्णन किया है।

''चलो जलाएं दीप वहां, जहाँ अभी भी अंधेरा हैं।
शिक्षा पाकर भिक्षा मांगे, युवजन खाए ठोकर आज।
आजादी का स्वप्न दिखाकर, पाखंडी, करते आज।।
भ्रष्ट व्यवस्था ने भी डाला, अब यहाँ डेरा है।
चलो जलाए दीप वहां जहां अभी भी अंधेरा है।।''

पिछले वर्षो से गलत बातें पाठ्यक्रमों से हटाने का कार्य शिक्षा घटनाओं आंदोलन समिति के माध्यम से किया जा रहा है। तथा अच्छी बातें। लिखने का कार्य शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के द्वारा शुरू किया गया है। देश की शिक्षा में भी यही आवश्यक है हमारी शिक्षा प्रणाली में भी ऐसी विसंगतियों विकृतियाँ डाली गई है जो विद्यार्थी, विदेशी भी नही डाल सकते, लेकिन हमारे देश के ही एक निश्चित विचारधारा के लोग ऐसा कर रहे है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार शिक्ष प्रणाली में विसंगतिया, विकृतियां है शिक्षा अध्यापक प्रक्रिया में भी ऐसे कई विकृतियां विसंगतियों दुश्चिंता व समायोजन जिससे अध्यापकों को शिक्षा प्रक्रिया दौरान असामान्य महसूस करते है। आज स्वतत्रंता के 60–65 वर्षो के बाद भी यह बाते चल रही है। क्योंकि देश की शिक्षा में परिवर्तन की चाली अध्यापक शिक्षा है। आज के संदर्भ में शिक्षा देने के कार्य को व्यवसाय माना जाने लगा है। यह व्यवसाय नही हमसे (मिशन) है। मनुष्य की ताकत हमसे है। और पूर्ण मनोयोग, दुश्चिंता मुक्त व समायोजन युक्त कार्य करने वाले अध्यापकों द्वारा ही यह सब संभव है।

अध्यापक सबसे बड़ा मनौवैज्ञानिक है उसे हर दिन सभी छात्रों की मनोदशा समझनी पड़ती है। साथ अध्यापक शिक्षा ऐसी हो जो अध्यापक के आचरण से ही सिखाएं। अध्यापक समाज की सर्वाधिक संवेदनशील इकाई है। अध्यापक अपना ठीक तरह से कान नही है यह आरोप तो सर्वत्र लगाया जाता है। लेकिन यह विचार कोई नही करता कि समाज के कर्णदाता, द्राणाचार्यो के क्या–क्या चुनौतियाँ या घटक है जिसके कारण अपने कार्य स्थल पर अपना शत प्रतिशत नही दे पाते है।

मुख्य शब्द : अध्यापक शिक्षा, दुश्चिंता, समायोजन, विसंगतियों, विकृतियाँ अखिल भारतीय शिक्षा सेवा, पुर्नपरीक्षण मूल्यांकन व विशिष्ट दर्जा।

प्रस्तावना

प्रायोगिक कार्य, सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षा अभ्यास यह सब मजाक है महाविद्यालय धन कमाने की दुकानें बन गए है महाविद्यालयों में वर्ष में 30 दिन उपस्थिति रहकर परीक्षा उतीर्ण कर उपाधि प्राप्त कर लेना यह सब दिखाई दे रहा है और दूसरी और शिक्षा, शिक्षा कर्मी, ठेके पर या संविदा पर रख जाने वाले अध्यापक, गुरूजी अनेक शब्दों से यह आज विभूषित है। परन्तु इन्हें न शिक्षा से प्यार और न लगाव। आदि इन ही कारकों से शिक्षा अध्यापकों के मनोवैज्ञानिक घटकों को जैसे दुश्चिंता व समायोजन, विकृतियाँ व विसंगति का भाव उत्पन्न होता है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ रहा है।

शिक्षक के बारे में निम्न पंक्तियां :–

बिना उसके शक्ति का उजागर नहीं होता ,
ज्ञान व जड़त्व का विदारण नहीं होता ।
भले ही हो वेतन उसका साधारण ही सही ,
पर शिक्षक कभी भी साधरण नहीं होता ।

मानव के समग्र विकास तथा प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के परिपेक्ष्य के अन्तर्गत अध्यापकों का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व सामाजिक विकास होता है। आज सम्पूर्ण विश्व यह स्वीकार करने लगा है। कि हमारे भविष्य को आकार देने में अध्यापक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। अध्यापक मानव सम्बन्धों का एक कलाकार है जो निरन्तर गतिशील माध्यम से कार्य करता है। वह विद्यार्थियों की भावनाओं तथा आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होता है। अध्यापक शिक्षा ही शिक्षक – शैक्षिक प्रक्रिया को अवनरत करता है। जिससे में शिक्षा अध्यापक महाविद्यालय वातावरण में समायोजन हो सके। चूंकि समायोजन जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

यह देखा गया है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षा अध्यापक विपरीत परिस्थितियों में समायोजित स्थापित नही कर पाते जिसके फलस्वरूप उनमें दुश्चिंता, तनाव, अवसाद, विसंगतियों विकृतियाँ आदि घटको से शिक्षा अध्यापकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक की कल्पना चिंतन करने की बजाय चिंतित रहने वाले एक मनुष्य के रूप में की जा सकती है। एक तरफ तो वह शैक्षिक प्रशासन व प्रबन्धकीय के ''शोषण युक्त भय वातावरण में जीवन दूसरी तरफ अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया के लिए ''भय युक्त माहौल'' बनाने का काम भी करता है।

इस प्रकार अध्यापक शिक्षा की गुणवता बनाये रखने के लिए आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक अहमियत देने की आवश्यकता है धनधान्य एवं संसाधनों से परिपूर्ण कुशल एवं प्रशिक्षित मानव संसाधन की आर्थिक आवश्यकता है। जिससे वर्तमान और भविष्य में राज्य का संतुलित विकास निरन्तर सतत् रूप से होता रहे। इनके लिए एक सुसंगठित शिक्षा अध्यापक नीति और उसमें एक सगुठित अध्यापक शिक्षा नीति अधिक सार्थक होगी। मनमाने ढ़ंग से बी.एड. कॉलेज खोलने की अनुमति देना और शिक्षा प्रशिक्षकों की नियुक्ति तथा आधारभूत संरचना जुटाने में मानकों की अवहेलना करने वाली शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं को बी.एड. पाठ्यक्रम चलाने देना एक सामाजिक अपराध समझा जाना चाहिए क्योंकि सुयोग्य शिक्षक प्रशिक्षकों की के अभाव में यदि एक भी सत्र में अशिक्षित, अल्प प्रशिक्षित या अर्द्व प्रशिक्षित शिक्षक उम्मीदवारों को बी.एड. उपाधि वितरित की जाती है तो ऐसे लोग शिक्षक बनाने का लाइसेंस पाकर जीनवपर्यन्त भावी पीढ़ी के साथ न्याय नहीं नही कर सकेंगे।

अध्यापक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए एन. सी. टी. ई के नियमानुसार बी.एड. संचालित हो – ताकि अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया को विकास हो जिससे शिक्षा शिक्षक दुश्चिंता से मुक्त, पूर्ण मनोवैज्ञानिक रूप से समायोजित होकर शिक्षण–शिक्षा का प्रभावी बना सकेंगे। एनसीटीई के मानकों के अनुसार ही शिक्षा अध्यापक शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों की योग्यता, वेतनमान तथा कार्यदशाओं में बढ़ा अन्तर न हों। अध्यापक शिक्षा सुधार के लिए हाल ही में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में नवीनतम शिक्षण प्रशिक्षण संशोधन बिल 2017 केबिनेट ने मोहर लगाई जिससे शिक्षा शिक्षकों में आने वाले विपरीत परिस्थितियों के घटकों से मुक्त हो सकेंगे। अधिक कार्य अवधि, आत्मसात् हो गई। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा अध्यापकों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति दयनीय होती हैं जिसके कारण आज अध्यापकों में दुश्चिंता, समायोजित न होना एक चुनौतियुक्त घटकों में रूप में उभर रहा है। इन घटकों को ध्यान में रखते हुए इन अध्यापकों की आर्थिक, सामाजिक, मानसिक को बेहत्तर करने के लिए संस्थाओं के प्रबन्धकीय व प्रशासन साथ ही सरकार इन्हें सरकारी अनुदान द्वारा लागू करना चाहिए ताकि अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावी हो। एनसीटीई ने जिस बेरहमी तथा बेशर्मी से बी.एड. महाविद्यालयों को खोलने की स्वीकृति की है। वह दुःखद गाथा है प्रायः सभी महाविद्यालय मापदण्डों की अवहेलना करते हैं। राजस्थान जैसे राज्य के वर्तमान में 857 बी.एड. महाविद्यालय है जिसमें 42 हजार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यही स्थिति अन्य राज्यों की भी है। अधिकत्तर महाविद्यालय अनुभवहीन आचार्य नियुक्त जिनको कम वेतन देकर नियुक्त किया गया।

साहित्यावलोकन

साहित्य के पुनरावलोकन का कार्य अत्यन्त सृजनशील एवं रचनात्मक होता है क्योंकि इसे शोधकर्ताओं को अपने अध्ययन को युक्तिपूर्ण कथन देने के लिए प्राप्त ज्ञान को एकत्रित करना होता है और अपने शोध द्वारा निकाले गये निष्कर्षो को भी वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करना होता है जिसके लिये शोधकर्ता को एक विशेष प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जिसकी जानकारी सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन से मिलती है। शोधकर्ता द्वारा अपने अध्ययन में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया में दुश्चिंता समायोजन एक आवश्यक घटक का अध्ययन किया गया हैं अतः विभिन्न चरो से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण निम्न प्रकार से किया गया है।

1. भवानी सिंह (2009) अध्ययन पाया कि दुश्चिंता एवं समायोजन विभिन्न व्यवहारों को प्रभावित करता है।
2. एस. कृष्ण. ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षा अध्यापकों की महाविद्यालय के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. ए. के. नौटियाल (2005) में अपने अध्ययन में पाया कि जैसे जैसे दुश्चिंता बढ़ती है वैसे वैसे उनको समायोजन संबधित समस्या अधिक आती है।
4. तनवीर अहमद (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र छात्राओं में दुंश्चिता समान होती है लेकिन समायोजन में अंतर होता है। छात्राओं में समायोजन छात्रों की अपेक्षा अधिक होता है।

प्रयुक्त शब्दावली

दुश्चिंता

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में यह एक महत्वपूर्ण घटक है कि आज के दौर के दरव आर्थिक परिदृश्य में दस्व शैक्षणिक योग्यता के बाद भी एक अध्यापक को निम्न वेतन व आर्थिक शोषण का शिकार होना पड़ता है जो कि अध्यापकों मन में यह मनौवैज्ञानिक कारण उसे दुश्चिंता का शिकार बना देता है। जिससे शिक्षा–प्रक्रिया व समाज पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है और

अध्यापकों की निजी जिदंगी पर भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। यह घटक देश की शिक्षा प्रणाली को पद चिंहित करता है।

समायोजन

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में नये घटकों के रूप में समायोजन घटक है जो अध्यापकों की दुश्चिंता की स्थिति में अपने आप को अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया समायोजन नही कर पाता है। क्योंकि अध्यापक शिक्षा के रूप में शिक्षकों को समान काम के बदले समान वेतन नही मिलता तथा शोषण होता है तो एक अध्यापक अपने आप को समायोजित नही कर पाता है। जिसे अध्यापाशिक्षा प्रक्रिया परप बुरा प्रभाव पड़ता है। जो वर्तमान की सबसे कड़ी समस्या है।

विसंगति

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में अन्य घटकों में एक है। अध्यापक विधालय वातावरण से भी ग्रस्त रहता है। से अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया बाधित होती है। जिसमें भी अध्यापक अपने को इन वातावरण में समाजियोजित नही कर पाता है।

विकृतियां

कई अनेक विकृतियां अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया के दौरान आती है जिससे अध्यापक शिक्षा के ध्यये पूरा नहीं हो पाता है।

उपर्युक्त यह स्थिति एक तरह से हमारी वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया पद्वति असफलता सिद्ध करती है। अतः जरूरी है कि अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया के घटकों को सामाजिक रूप से परिभाषित कर पुनरीक्षित किया जाए।

अध्यापकों को ''अध्यापक शिक्षा'' के रूप में अक्सर मिलें – समान कार्य के लिए समान परिस्थितियां और समान वेतन की अनुशंसा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में और मानव अधिकार घोषणा पत्र के अनुच्छेद 21, 22 और 23 को वर्णित होते हुए भी नाता तामधारी अध्यापक मौजूद है एक ही शिक्षक महाविद्यालयों में अनेक प्रकार के अध्यापकों के पदस्थ रहते हुए संभी के समन में घोषित – अघोषित तनावों या दश्चिंता के कारण अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया के व्यवधान हो रहा है। हम परिस्थिति को गम्भीरता से समझे बगैर और परिस्थितियों मं सुधार किए बगैर भला शिक्षण में सुधार कैसे होगा? सरकार को सभी अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के कार्यरत अध्यापकों के लिए एक समान कार्यनीति, समान पदनाम, समान वेतन देने की नीति तय कर एक निश्चित कार्यविधिके बाद पदोन्नति देने का भी ऐलान करना चाहिए।

विधि

अनुसंधान की सफलता हेतु अपनाई गई अध्ययन विधि का अत्यधिक महत्व है। किसी भी शोध की सफलता उसकी योजना व कार्यविधि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध प्रारूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग में लिया गया है क्योंकि सर्वेक्षण विधि, शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में व्यापक रूप में उपयोग में लाई जाती है। इस प्रकार सर्वेक्षण उस प्रदत्त को एकत्रित करने व विश्लेषण करने की विधि है, जो बहुत से ऐसे उत्तर देने वालों द्वारा संकलित किया जाता है जो एक सुनिश्चित समुदाय के प्रतिनिधि हो। अतः शोधकर्ता का अनुसंधान कार्य इसी प्रवृति का होने के कारण प्रस्तुत अनुसंधान कार्य करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। इस हेतु प्रशनावली का निर्माण किया गया जिस के तहत शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रकृति का मुल्याकंन हेतु प्रश्नावली तैयार की गई जिसके अन्तर्गत निम्न कारणो से सम्बन्धित प्रश्नों को रखा गया। दुश्चिंता, समायोजन विसंगति, विकृति, आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक आदि। इस प्रश्नावली को शिक्षा अध्यापक तथा की चुनौतियों संबंधित राय ली गई हैं तथा बहुमत के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया।

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में घटकों का निरूपण

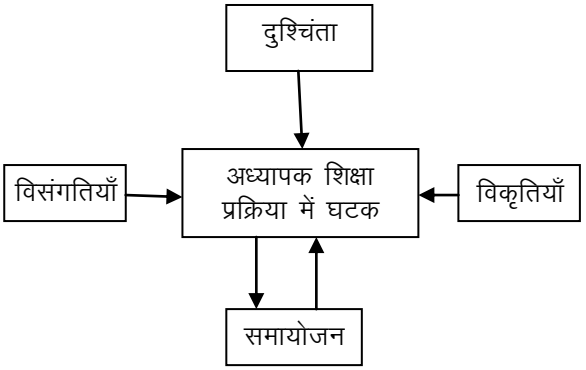

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया घटकों के सामायिक रूप से सुनियोजित पुर्नरक्षित प्रारूप

श्रेष्ठतम शिक्षा अध्यापक कार्यकर्ता की नियुक्ति

अध्यापक शिक्षा परिवर्तन के लिए अध्यापकों का मनोबल बनाए रखने और उत्साह पूर्वक मार्च करने की इच्छाशक्ति पैदा करने के लिए संगठित प्रयास करने होंगे। तभी अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा अध्यापकों को मनौवैज्ञानिक ढंग से दुश्चिंता मुक्त कर सकेंगे जिससे श्रेष्ठतम वातावरण बनेगा।

अध्यापक शिक्षा के अध्यापकों का मनोबल बढ़ाया जाए

समूची दुनिया के सभी विकसति और विकासशील देशों में अध्यापक शिक्षा के अध्यापको को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और प्रशासनिक दृष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है। साथ ही ऐसी अध्यापक शिक्षा नीति बनाई जाए जिसमें उनका मनोबल सदैव ऊँचा बना रहे। जब तक अनुभव जन्य ज्ञान, और कौशलों को महत्व नही दिया जाएगा तब तक अध्यापक ''शिक्षण प्रक्रिया'' पूरी नही हो सकती है अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया के लिए कार्यरत अध्यापको की दक्षता और मनोबल बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि अध्यापकों को उनमे व्यक्तित्व विकास की तब भी संभव है तब वह दुश्चिंता मुक्त समायोजित हो।

आज जरूरत हम वाली है कि महाविद्यालय प्रशासन व प्रबन्धन अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया शैक्षिक कार्यक्रमों के समायोजित बनाया जाए।

शिक्षण प्रशिक्षण संस्था प्रशानिक एवं प्रबन्धकीय व्यवस्थागत सुधार

शिक्षा प्रशासन की यह नियति बन गई की हमने शिक्षा स्तर पर की स्थायित्व नही है। राष्ट्रीय स्तर पर

लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और कार्यविधि 1992 में स्वीकृत अखिल भारतीय शिक्षा सेवा की स्थापना आज तक नही हो पाई है। शिक्षा में सुधार के लिए कार्यरत अध्यापक शिक्षा में अध्यापकों को समर्थन देने की दृष्टि से यह अत्यंत आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षा के प्रबन्धक और प्रशासन को सुधारा जाए। यह अत्यन्त आवश्यक है कि समग्रतः अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया को नियंत्रित, समायोजित किये जाने हेतु राज्य की अलग से अध्यापक शिक्षा नीति तैयार की जानी चाहिए।

योग्यता के अनुसार शिक्षा अध्यापको के रूप में अवसर

कार्यरत अध्यापकों की दक्षता का सम्मान और उनकी कार्यक्षमता का उपयोग कर सभी को समान कार्य समान वेतन व निश्चित कार्यअवधि किया जाना चाहिए ताकि अध्यापक शिक्षा अध्यापकों की सामाजिक, आर्थिक मनोवैज्ञानिक रूप से दुश्चिंता मुक्त होकर अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया को पूर्ण मनोयोग से समायोजित करेगें अंततः अध्यापक शिक्षा सुधार के लिए अब हमें विचार करने के बजाय कर्तव्य की ओर बढ़ता होगा। आज अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक सुधार की दृष्टि से शीघ्र सार्थक कदम उठाते हुए हमें ऐसी अध्यापक शिक्षा पद्धति और कार्यक्रम करने होंगे जो अध्यापको के मन में श्रम के प्रति निष्ठा पैदा करें।

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया घटकों के सामायिक रूप से सुनियोजित पुर्नरक्षित प्रारूप

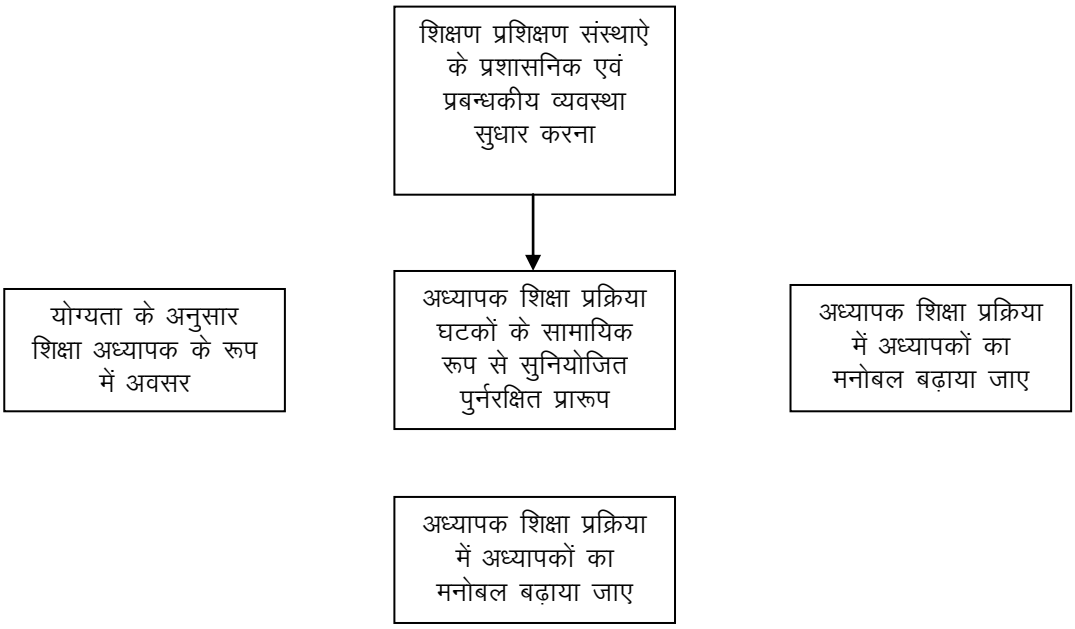

समग्रतः एक ऐसा प्रभावी शिक्षा अध्यापक कार्यक्रम बनाना होगा जिसमें

1. राज्य की अध्यापक शिक्षा नीति निर्धारण में शिक्षाविदों और कार्यरत अध्यापकों को वास्वत को सहभागी बना कर सभी विचारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाए।
2. अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में परिवर्तन अध्यापकों को हो, प्रशासनिक अधिकारों को नही।
3. शिक्षण – प्रशिक्षण संस्थाओं में पर्याप्त मात्रा में शैक्षिक सामग्री की पूर्ति व अध्यापकों की नियुक्ति पद की योग्यता के अनुसार समान काम, समान वेन नियमित नियुक्ति की जाए।
4. शिक्षक शिक्षा के अध्यापकों के सहयोग हेतु ''राज्य अध्यापक शिक्षा सदंर्भ और स्त्रोत केन्द्र स्थापित किये जाये।
5. वर्तमान में अध्याय शिक्षा प्रक्रिया अध्यापकों के सामने तनाव (दुश्चिंता), प्रशिक्षण संस्थाओं प्रबन्धकीय व प्रशसन के साथ समायोजित न करना प्रमुख घटकों के रूप में उभर रहे है – हमके साथ ही अध्यापक शिक्षा व्यापक गतिशील, मूल्यों या आधारित, उतरदायी, वैश्वीकरण की विषमताओं को निपटने के लिए सामर्थ रखने वाले दूरदर्शी अध्यापक व्यवस्था का विकास करना चाहिए –
6. वर्तमान में परिपेक्ष्य के अध्यापक शिक्षा का पुर्नपरीक्षण करके अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया कीप गुणवता, तकनीकि क्षेत्र का ज्ञान, सेवा लेने की जटिल प्रक्रिया तथा समसामायिक विषयों का ज्ञान आवश्यक है।
7. मेरा मानना है कि ''अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया को भी विशिष्ट दर्जा दिया जाता चाहिए ताकि अध्यापकों के समक्ष आने वाले घटकों का मूल्यांकन कर उसके लिए नई और प्रभावी योजनाए बनाना जरूरी है हमसे दोहरा लाभ होगा।
   पहला – खुद अध्यापक प्रभावी दुश्चिंता मुक्त समायोजित होगा तो उसकी शिक्षण संस्था सभी प्रभावी होगी जबकि दूसरा बड़ा फायदा विद्यार्थी वर्ग व शिक्षण प्रक्रिया को मिलेगा।
8. भारतीय प्ररिपेक्ष्य पर मेरा कहना है कि यहाँ अध्यापक शिक्षा को लेकर अध्यापकों की व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक घटकों (विशेष दुश्चिंता या तनाव समायोजन) को लेकर शोध होने चाहिए। इसमे पारा निष्कर्षो का मूल्यांकन कर अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में आवश्यक फेरबदल करने होंगे।

9. दौरा दलों की पुन संरचना, अध्यापक शिक्षा संस्थाओं की आवधिक निगरानी और एनसीटीई द्वारा निर्धारित मनमाने एवं मानदड़ों के अनुरूप जो संस्थाएं संचालित नही है उनकी मान्यता सभारत करने सहित विभिन्न गुणवता नियंत्रण प्रणालियां तैयार की जानी चाहिए।
10. अध्यापक शिक्षा का दर्शन स्पष्ट करते हुए नए दृष्टिकोण परावर्ती संचालन केन्द्रीय लक्ष्य हों।

निष्कर्ष

एक शिक्षा अध्यापक के बारे में कहा गया है कि

''गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है गढ़,
गढ़ काढ़ै खोट।
भीतर हाथ सहाय दे,
बाहर मारैचोट।।

अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षा अध्यापक वह जिसमें कुछ विशिष्ट शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक गुण मौजूद हों। इन सब गुणों की आवश्यकता अध्यापन शिक्षा के प्रत्येक स्तर में महसूस होती है। अध्यापक शिक्षा अध्यापक प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। शिक्षा अध्यापक वह जिमसें शिक्षा प्रक्रिया को एक सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है।

किसी भी क्षेत्रों में योग्य व्यक्तियों को पहुँचाने में अध्यापकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता था और रहेगा। इस सम्बन्ध की पुष्टि कबीर लिखते हुए की – ''अध्यापक वास्तविक रूप में राष्ट्र के सौभाग्य के निर्माता है।'' अन्तिम रूप से अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया ऐसी हो जो मेक इन इंडिया और सब का साथ सबका विकास पर आधारित हो साथ ही वर्तमान में शिक्षा प्रणाली में कारोबारी स्टार्टअप की तरह ही अध्यापक शिक्षा स्र्टाटअप को स्थान दे कर अध्यापक शिक्षा में सुधार किया जा सकता है। जिसे शिक्षा अध्यापक एक बेहत्तर शिक्षा का माहौल पैदा करके दुश्चिंता, विसंगतियों व विकृतियां समायोजन जैसे घटकों के नकारात्मक प्रभावों को हटा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *एलिस,आर.एस.,1951: एज्यूकेशनल साइकोलॉजी*
2. *Bar Scates and good ,1991:Methodology of Education Research,New York*
3. *Best J.S., 1969:Research in Education , New York , Prentice Hall, PP.108*
4. *Best J.S., 1969:Element of Education Research , New York , Prestice Hall , NC*
5. *भार्गव, महेश 1985 : आधुनिक मनोविज्ञान शिक्षण एवं मापन*
6. *बिस्ट्रा ,प्रो. स्टीपव : वर्तमान में शिक्षा की चुनौतियां*
7. *भारतीय आधुनिक शिक्षा 1986:ग्रामीण व शहरी विद्याथियों के मुल्य*
8. *दीना नाथ, सुभाष खुंटिया : शिक्षा की चुनौतियां*
9. *जी.सी. भटनाचार्य : अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा*
10. *गुलाब कोठारी, 2013: संपादक राजस्थान पत्रिका*
11. *जवाहर लाल राय, 2014: शिक्षा पथ, राय प्रकाशन मध्य प्रदेश*
12. *मोजर सी,ए. : सर्वे मेथड्स इन सोसियल इनवेस्टीगेसन, न्यू योर्क*
13. *एन. सी. टी. ई., 2014 : नई दिल्ली*
14. *सुखिया, ए.पी. महरोत्रा : शैक्षिक अनुसंधान के मुल तत्व*
15. *ठोढीयाल एवं फाटक : शैक्षिक अनुसंधान , राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर*
16. *विजय बहादुर सिंह : शिक्षक व्यवहार , श्रेया प्रकाशन इलाहबाद*
17. *www.teindia.nic.in:शिक्षक शिक्षा*